Global Journal of Multidisciplinary Studies Available online at www.gjms.co.in
Volume 3, Issue -3, Feb 2014
ISSN: - 2348-0459

''माखनलाल चतुर्वेदी की पत्रकारिता का राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान''

डॉ. (श्रीमती) नीलम सैनी

सारांश

पं0 माखनलाल चतुर्वेदी की पत्रकारिता का राष्ट्रीय आन्दोलन में विशेषकर मध्यप्रदेश के संदर्भ में अतुलनीय योगदान रहा है । श्री माखनलाल चतुर्वेदी श्री माधवराव के सम्पर्क में आए और उनसे बहुत अधिक प्रभावित हुए । वे उन्हे राजनीतिक गुरु मानते थे । उन्ही की प्रेरणा से राजनीति में प्रवेश किया । राजनीतिक आन्दोलन में सक्रिय रुप से भाग लेने लगे थे । माखनलाल एक क्रांतिकारी व्यक्ति थे । अपने क्रांतिकारी विचारों को पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से व्यक्त करते थे । खण्डवा में उस समय वहां केवल एक मराठी साप्ताहिक पत्र 'सुबोध सिंधु'' ही प्रकाशित हुआ करता था । इस पत्र का हिन्दी संस्करण माणिकचंद चटर्जी के मार्गदर्शन में प्रारंभ हुआ । इसके निबंध लेख समाचार माखनलाल बिना किसी सहायता के लिखने लगे थे । तत्कालीन स्थानीय पुलिस अधीक्षक मि. फेयर वेदर को उसमें राजद्रोह की गंध मिली और उन्होने उस लेख के बार में पत्र संचालकों से पूछताछ की और कहा तुम्हारे पत्र में राजद्रोह क्यो छपा इस पर संचालकों ने निर्मल भाव से कह दिया कि, वह लेख तो माखनलाल का लिखा हुआ था । पुलिस अधीक्षक ने उन्हे स्कूल से बुलाया माखनलाल को ज्यों ही इस बात का पता चला तो वे दौडकर माणिकचंद चटर्जी के पास गये ।

खोज शब्द – अतुलनीय, क्रांतिकारी, तत्कालीन

प्रस्तावना

माखनलाल पुलिस अधीक्षक महाशय के यहां गए और अपराधी की तरह लगभग दो बजे तक बैठे रहे और इसके बाद फेयर वेदर महाशय ने उन्हे घूरकर देखा और कहा – 'तुम सिडीशन लिखता है , पता है तुमको हम कुचल देगा ।'

कलम चलाने के लिए माखनलाल को प्रसाद मिलने का यह पहला अवसर था । इसी प्रकार राजनीति में प्रवेश के बाद उन्हे अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा । जब अध्यापकीय जीवन से त्यागपत्र देने की बात आयी तो उनके पिता के दिल पर क्या बीती होगी , जिसने न जाने कितने दुःखो को सहकर कितने प्रयत्नों के बाद इस पुत्र को अध्यापक बनाया । इसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन था ।वे 24 वर्ष के हो चुके थे, अपनी बातों के पक्के थे । इसलिए पिता को यह लगा कि, पुत्र को भलाई बुराई का अधिकार दे देना चाहिए। उन्होने पत्र के उत्तर में इतना ही लिखा कि एक अध्यारक का पद छोड़ने के बाद दुबारा इस बारे में नही सोचना ।

जिस उद्देश्य से उन्होने त्याग पत्र दिया वह जैसे पत्र निकलने लगा और उनके सम्पूर्ण कार्य का संचालन सफलतापूर्वक करने लगे । इस पत्र का प्रथम अंक 7 अप्रेल 1913 को निकला । उसमें संपादकीय नही था केवल पत्र का उद्देश्य 'प्रभा' के प्रार्दुभाव शीर्षक से संक्षिप्त शब्दों में किया गया था। अनेक विचारों का सामना करते हुए ''प्रथम अंक पाठको की सेवा में प्रस्तुत है । इससे यह अनुभव हो सकेगा कि, प्रभा किस प्रकार सेवा करने का संकल्प लिए हुए रुप से दिया गया है । 'प्रभा'' के प्रारंभिक पांच छः अंको में महात्मा जी का जीवन धारावाहिक रुपे से दिया गया है ।''प्रभा'' के पत्र की भाषा मध्यप्रदेश में बोली जाने वोली संस्कृतनिष्ठ भाषा है जिसमें अभिव्यक्ति का लालित्य कम से कम साहित्य लिखने का आग्रह सर्वाधिक है ।

प्रथम वर्ष से ही प्रभा को अच्छे लेखकों का सहयोग मिलने लगा, परन्तु अधिकांश श्रम माखनलाल ने किया । लेखक के साथ उसका नाम कही नही है । वे तो श्री गोपाल, भारत संतान, कुछ नही, भारतीय, सुधार प्रिय, नीति–प्रेमी, एक विद्यार्थी , एक निर्धन विद्यार्थी , एक भारतीय प्रजा, एक नवयुवक तरुण भारत एक प्रान्तीय प्राणी, एक उच्च शिक्षित, एक भारतवासी, श्रीयुत नवनीत, श्री चंचल श्री शंकर और एक भारतीय आत्मा इस प्रकार के अनेक नामों से उन्होनें स्वयं लिखा है।

उस समय अंग्रेजी सरकार का बड़ा आंतक था और पुलिस का अधिकार मध्यप्रदेश पर कुछ कम नही था । सरकार पत्र निकालने की सुविधा तो दे देती थी, परंन्तु स्वतंत्र लेखन की सुविधा नही देती थी और उनकी सुविधाओं पर उसका पूर्ण रुप से अंकुश था । यद्यपि यह साहित्यिक पत्र था लेकिन पुलिस निरीक्षक रतनलाल जैसे लोगो से बराबर सावधान रहने की बहुत आवश्यकता थी । लेख उस समय धर्म के माध्यम से प्रस्तुत करते थे और उस समय जैसा कि, पत्रिका का बहुत महत्व था परन्तु माखनलाल ने इस वृहत

साहित्य रुपी बन को अपने अथक परिश्रम से असहाय स्थिति में रहकर भी उपजाऊ बनाया । प्रभा की प्रशंसा 1913 में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने की थी जो कि, उस समय के युग में सरस्वती के संपादक थे । मध्यप्रदेश सरकार ने भी प्रभा से प्रभावित होकर लिखा था कि, यह एक उच्च स्तरीय साहित्यिक पत्रिका है, मुद्रण और संपादन एवं अन्य व्यवस्था की दृष्टि से यह प्रयास प्रशंसनीय है ।

'प्रभा' का संपादन एवं उसकी प्राणदान देने के लिए माखनलाल ने अपने घर गृहस्थी के सुखो को भी त्यागा । किन्तु कुछ अर्थ अभाव एवं प्रेस न होने के कारण फरवरी 1914 में ''प्रभा'' के 12 अंक निकलने के बाद अनिश्चित समय के लिए स्थगित हो गया ।

गणेश शंकर विद्यार्थी की प्रेरणा से यह पत्र पुनः 15 मार्च से निकलने लगा । किन्तु उस पत्र के भाग्य में तो बंद होना ही बदा था अतः अधिक घाटे के कारण अगले वर्ष 12 अंक निकालकर उसे बंद करना पड़ा ।

'कर्मवीर' जो कि, उनके संपादन का दूसरा मौका था, सन् 1998 में जबलपुर से आरम्भ हुआ था । कर्मवीर का प्रकाशन श्री माधवराव सप्रे के संचालन में हुआ था । 7 जनवरी सन् 1920 में जब जबलपुर से कर्मवीर का प्रकाशन हुआ तब वह महाकौशल की जनता की आंखो का तारा बन गया । अपने इस क्षेत्र में अधिक चेतना आ गई है । इस पत्र का ज्वलंत कार्य था । उस समय सागर के पास रतौना में खुल रहे कसाईखाने का तीव्र विरोध किया जिसका श्रेय माखनलाल का यह पत्र था । जब घोर निर्धनता में रह रहे थे एवं कर्मवीर का संपादन कर रहे थे तब उस समय प्रलोभनो ने उन्हे अपने इस देश भक्ति के पथ से हटाना चाहा किन्तु वे कभी सम्पन्न नहीं हो सके । मध्य भारत के एक बडे राज्य के एक महाराजा के दुराचारों और अत्याचारों का भांडा कर्मवीर फोड़ रहा था तब उस महाराज के एक रिश्तेदार 19 हजार रुपये लेकर इनके पास आए और उनकी लेखनी को उन्होने खरीदना चाहा किन्तु उन्हे प्रस्ताव को ठुकरा दिया । उन्होने आर्थिक कठिनाईयों में रहना स्वीकार किया किन्तु अपना ईमान नही बेचा और अनेक –अनेक राजाओं ने इन्हे धन की बडी बडी रकमें देकर चुप कराना चाहा किन्तु वे सत्य के पथ पर अटल रहे ।

कर्मवीर उस समय जनता का मुख पत्र बना हुआ था । प्रायः राजा लोग अपने राज्य में कर्मवीर का प्रवेश बंद कर देते थे । एक समय तो ऐसा आया जब कर्मवीर 18 राज्यों में प्रवेश बंद था । जिससे पत्र की बडी आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा फिर भी इन्होने साहस के साथ स्थिति का सामना किया ।

इस समय कर्मवीर पर माखनलाल का स्वामित्व था । 1922 को राघवेन्द्र राव के हस्तक्षेप से माखनलाल कर्मवीर के संपादन कार्य से अलग हो गये तो पत्र ही बंद हो गया । किन्तु हमारे कर्मवीर ने कभी हार न मानी और इसका पुनः प्रकाशन खण्डवा में हुआ ।

प्रताप का संपादन गणेश शंकर के जेल जाने पर अपने कानपुर में रहकर 1923 –24 में 3 मार्च 1924 तक संपादक रहे । इस कार्य में अनेक समस्याओं का सामना करते हुऐ अपने

हृदय में तूफ़ानी क्रांति का स्वदेश में व्याप्त जड़ता को नष्ट करने के लिए प्रभा, कर्मवीर, प्रताप के माध्यम से उन्होने विचारो का प्रसार किया । इस स्तर इन पत्रिकाओं ने देश के विकास के पथ पर अग्रसर होने का गौरव प्रदान किया था ।

संदर्भ सूची

1	वार्ता प्रसंग	श्री हरिकृष्ण त्रिपाठी	140
2	माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व और काव्य	डॉ0 रामखिलावन तिवारी	167
3	आज के लोकप्रिय कवि हिन्दी कवि ‘: माखनलाल चतुर्वेदी	हरिकृष्ण प्रेमी	81
4	माखन लाल चतुर्वेदी के काव्य का अनुशीलन	डॉ0 जगदीश चौरे	75